

# अंधा धुंध पैरवी का अन्जाम

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहले पहले सिर्फ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आखिर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

**“ईमान” की असल बुनियाद क्या है?**

अलहम्दुलिल्लाह ﷻ ! हम मुसलमान हैं और हमारे ईमान की असल बुनियाद अल्लाह ﷻ और उसके प्यारे मेहबूब ﷺ की सच्ची मुहब्बत ही तो है। यही वजह है कि कोई मुसलमान जान बूझकर कभी इन हस्तियों से मुताल्लिक गुस्ताखाना नज़रियात रखने का सोच भी नहीं सकता क्योंकि यह चीज़ दुनिया

व आखिरत में उसकी बर्बादी का सबब बन सकती है चुनाँचे:

[ سورة الاحزاب , آیت نمبر 57 ]  
(सूरातुल अहज़ाब, आयत नं० 57)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** “बेशक जो लोग ﷻ और उसके रसूल ﷺ को तकलीफ़ देते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में ﷻ की फटकार है और उसने उनके लिये ज़लील व ख़वार कर देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।” **नऊजु बिल्लाह ﷻ**

**यहूदो नसारा की “गुमराही” की बड़ी वजह:**

ﷻ ने यहूदियों और ईसाइयों की गुमराही व बर्बादी की सबसे बड़ी वजह का जिक्र यँ फ़रमाया है:

[ سورة التوبة , آیت نمبر 31 ]  
(सूरातुल तौबह, आयत नं० 31)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** “उन (यहूदी और ईसाई) लोगों ने ﷻ को छोड़ कर अपने दर्वेश लोगों और उलेमा को अपना रब बना लिया है”।  
(वहिह को छोड़ कर अपने बुजुर्गों को मानते हैं )

**नोट:** यहूदियों और ईसाइयों के इस गुमराहकुन तर्ज अमल के बरअक्स ﷻ ने अपने मेहबूब सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के ज़रीए हमें **वहिह** की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई है:

[ سورة الاحقاف , آیت نمبر 4 ]  
(सूरातुल अहक़ाफ़, आयत नं० 4)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** “(काफ़िर लोग आप ﷺ से बहस करें तो फ़र्माओ): लाओ मेरे पास (अपनी कोई) किताब इस (कुरआन) से पहले या फिर इल्म के (नक़ल शुदा) आसार, अगर तुम सच्चे हो”।

**उम्मतें मुहम्मदिया ﷺ पर “शैतान” का ख़तरनाक हमला:**

हमारा हकीक़ी दुश्मन शैतान हमें यहूदो-नसारा की तरह अपने उलेमा और दर्वेश लोगों की **अंधा धुंध पैरवी** करवाते हुए गुस्ताख़ बनाकर हमेशा हमेशा के

लिये नाकाम करवाना चाहता है। इसलिये हमारे इन्तिहाई शफ़ीक़ आक़ा इमामे अज़म, इमामे काएनात, सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, इमामुल अन्बिया वल मुरसलीन, शफ़ीउल मुज़न्नबीन, रहमतुलिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ (ने ﷻ की तरफ़ से दी गई गैबी ख़बर के ज़रीए हमें पहले ही इस ख़तरे से मुताल्लिक आगाह फ़रमा दिया चुनाँचे:

**तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी **रिवायत** करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: यकीनन तुम भी पहले लोगों के तरीक़ों के पीछे चल पड़ोगे जिस तरह बालिशत, बालिशत के साथ और हाथ, हाथ के साथ (बराबर होता है) हत्ता कि अगर पहले लोगों ने किसी गोह के सुराख़ में दाख़िल होने का (बिल्कुल फ़िज़ूल) काम किया तो तुम भी उनके पीछे चलोगे। “पूछा गया या रसूलुल्लाह ﷺ उन पहले लोगों से मुराद यहूदी और नसानी (ईसाई) है? तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: “अगर वह मुराद नहीं तो और कौन मुराद है?”

[ صحيح بخاری “كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة” حديث نمبر 7320 , صحيح مسلم “كتاب العلم” حديث نمبر 6781 ]  
(सही बुखारी “किताबुल एतसाम बिल किताब वस्सुन्नह” हदीस नं० 7320, सही मुस्लिम “किताबुल इल्म” हदीस नं० 6781)

**इस तहरीर का “वाहिद मक्सद इस्लाह” है:**

आज बाअज़ भाइयों को ﷻ की **वहीह (कुरआन और सही अहदीस)** से हक़ बात बताई जाती है तो वह अपने फ़िक़ों के उलेमा और दर्वेशों की (अंधा धुंध पैरवी) करते हुए बिल्कुल यहूदो नसारा की तरह उस दावत को रद्द कर देते हैं लिहाज़ा यहाँ मजबूरन उन्हीं मशहूर उलेमा और दर्वेशों की लिखी हुई किताबों से चंद एक गुस्तख़ाना नज़रियात की निशानदही और फिर **वहीह** से सही इस्लामी अक़ाइद भी बयान किये जा रहे हैं ताकी लोग अपने फ़िक़ों के उलेमा और दर्वेशों की **अंधा धुंध पैरवी** करने की बजाए किसी शख़्स की वही बात मानें जो **वहीह** के मुताबिक़ हो क्योंकि हमारी दुनिया व आख़िरत में कामयाबी इसी पर मुनहसिर है। **वहीह** को छोड़ कर सिर्फ़ हलाक़त ही हलाक़त है: **लीजिए मुलाहिज़ा फ़रमाइये!**

**1 उलेमा का नज़रिया:**

(मौलाना रशीद अहमद गंगोही देओबंदी साहब अपने बारे में लिखते हैं।): “झूठा हूँ, कुछ नहीं हूँ, तेरा ही ज़िल्ल (साया) है, तेरा ही वजूद है, मैं क्या हूँ, कुछ नहीं हूँ, और जो मैं हूँ वह तू है और मैं और तू (का फ़र्क़ करना) खुद शिर्क़ दर शिर्क़ है”

[ دیوبندی : مولانا شیخ زکریا سہارنپوری صاحب “فضائل صدقات” صفحہ 558 ]  
(کتاب خانہ فیضی لاہور)  
(دهوآبندی : मौलانا शेख़ ज़करिया सहारनपूरी साहब “फ़ज़ाइले सदक़ात” सफ़हा 558) (कुतुब ख़ाना फैज़ी लाहौर)

**1 वहिह का फैसला:**

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ [ سورة الشورى , آیت نمبر 11 ]  
(سूरातुल शूरा, आयत नं० 11)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** “हरगिज़ नहीं है कोई भी शे उसकी मिसल और वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है”।

**2 उलेमा का नज़रिया:**

“जब मजमा हुआ कुफ़्फ़ार का मदीना पर कि इस्लाम का कला कमा कर दें। यह ग़ज़वा-ए-अहज़ाब का वाकिआ है। रब **ﷻ** ने मदद फ़रमाना चाही अपने हबीब **ﷺ** की, शिमाली हवा को हुक़म हुवा जा और काफ़िरो को नेस्त व नाबूद कर दे, हवा ने कहा “बीबियाँ रात को बाहर नहीं निकलतीं। तो अल्लाह **ﷻ** ने (हवा) को बांझ कर दिया। इसी वजह से शिमाली हवा से कभी पानी नहीं बरसता। फिर सबा से फ़रमाया तो उसने अर्ज़ किया, हम ने सुना और इताअत की वो गई और कुफ़्फ़ार को बर्बाद करना शुरु किया”।

[ بریلوی : مولانا احمد رضا خان صاحب “ملفوظات حصہ چہارم” صفحہ 377 ]  
(بک کارز جہلم)  
(بریلوی: मौलانا अहमद रज़ा ख़ाँ साहब “मल्फूज़ात हिस्सा चार” सफ़हा 377) (बुक कार्नर ज़ेहलुम)

**2 वहिह का फैसला:**

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ [ سورة يس , آیت نمبر 82 ]  
(सूरह यासीन, आयत नं० 82)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** “उस (ﷻ) का हुक़म (तो ऐसा नाफ़िज़ है कि) जब कभी किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उसे इतना फ़रमा देना काफ़ी है कि हो जा, तो वह (उसी वक़्त) हो जाती है”।



[ بریلوی: مفتی احمد یار نعیمی صاحب "شرح مشکوٰۃ" جلد سوم صفحہ 357 ] (قادی پبلیشرز لاہور)  
(بریلوی: مفتی احمد یار نعیمی صاحب "شرح مشکوٰۃ" جلد سوم صفحہ 357) (قادی پبلیشرز لاہور)

**[ سورة الاعراف ، آیت نمبر 54 ]**  
(سُورَةُ الْاَعْرَافِ, آيَاتُ 54)

**[ سورة الحج ، آیت نمبر 74 ]**  
(سُورَةُ الْحَجِّ، آيَات 74)

**[ صحیح بخاری "کتابُ الانبیاء" حدیث نمبر 3445 ]**  
(سहीہ بخاری "کیتاابل اُنَبِیاء" هدیس نٓ 3445)

**[ صحیح مُسلم "کتابُ المساجد" حدیث نمبر 1188 ]**  
(سہی مِسلِم "کِتابِل مَساجِد" ہدیَس نۓ 1188)

**[ دیوبندی: مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "امداد المشتاق" صفحہ 46 ]** (اسلامی کتب خانہ)  
(دےآوبندی: مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "امداد المشتاق" صفحہ 46) (اسلامی کتب خانہ)

(سُورَاتُ النَّمْلِ، آيَاتُ 62)

[ بریلوی : مولانا احمد رضا خاں صاحب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 106 ] ﴿ یک کارنر جہلم ﴾  
(بریلوی: مولانا احمد رضا خاں صاحب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 106) (بک کارنر جہلم)

**[ سورة فاطر، آیت نمبر 41 ]**  
(سُورَہ: فَاطِر، آيَتِ 41)

**[ بریلوی: مولانا احمد رضا خاں صاحب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 97 ] ﴿بک کا زر جہلم﴾**  
(بریلوی: मौलانا اہمدمد رجا خاں ساہب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 97) (بک کارنر جہلم)

**[ جامع ترمذی "کتاب صفة القيامة" حدیث نمبر 2516 ]**  
(جامعہ ترمذی "کتاب صفة القيامة" حدیث نمبر 2516)

[ بریلوی : مولانا مفتی احمد نعیمی صاحب "جاء الحق" صفحہ 145 ] قادری پبلیشرز لاہور  
(بریلوی: मौलाना मुफ्ती अहमद नईमी साहब "जाअल हक्क" सफ़्हा 145 (कादरी पब्लिशर्स लाहौर))



**[ صحیح بخاری "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 8 ، صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 113 ]**  
(سہی بخاری "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 8، سہی مسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 113)



4

**14 उलेमा का नज़रिया:** एक शख्स ने ख्वाब देखा जिसमें उसने कलमा पढ़ा: **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْرَفَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ** फिर बाद में बेदार होकर भी बे इख्तियारी में कहने लगा। **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا أَشْرَفَ عَلَى** फिर अपना वाकिआ लिखकर अपने पीर अशरफ अली थानवी को भेजा तो उन्होंने ने जवाब दिया: "उस वाकिआ में तसल्ली थी कि जिसकी तरफ तुम रुजू करते हो (यानी अशरफ अली थानवी साहब देओबंदी) वह बिऔनिही ताला मुत्तबा-ए-सुन्नत है"

**दियो बन्दी:** مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "الامداد" عدد 8 ماه صفر 1336 هـ جلد 3 صفحہ 35 [از مطبع امداد المطابع تھانوی] (देओबंदी : मौलाना अशरफ अली थानवी साहब "अल इमदाद" अदद 8 माह सफर 1336 हिं जिल्द 3 सफहा 35) (अज मतबा इम्दादुल मताबे थाना भवन)

**14 वहिह का फैसला:** **[سورة الاحزاب، آیت نمبر 56]** **إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا** (सूरातुल अहजाब, आयत नं 56)

**तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक ﷺ और उसके फरिश्ते नबी ﷺ पर दरुद भेजते हैं (तो) ऐ ईमान वालो तुम भी उनपर दरुद और खूब सलाम भेजो"।

**15 उलेमा का नज़रिया:** "(कब्रे मुबारक में) आप ﷺ की हयात दुनिया की सी है बिला मुकल्लफ होने और यह हयात मखसूस है आँ हजरत और शुहदा के साथ, बर्जखी नहीं है, जो हासिल है तमाम मुसलमानों को -----साबित हुवा कि आप ﷺ की हयात दुनियावी है"।

**दियो बन्दी:** مولانا خليل احمد سهارنپوری صاحب "المهند على المفند" صفحہ 30 [مکتبہ العلم لاہور] (देओबंदी : मौलाना खलील अहमद सहारनपुरी साहब "अल मुहन्नद अलल मुफन्नद" सफहा 30)

**15 वहिह का फैसला:** **[سورة البقره، آیت نمبر 154]** **وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ** (सूरातुल बकरह, आयत नं 154)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "और मत कहो मुर्दा उन को जो लोग शहीद कर दिये जाएं। ﷺ की राह में, बल्कि वह तो जिन्दा हैं लेकिन तुम उनकी जिन्दगी का शऊर नहीं रखते"।

**16 उलेमा का नज़रिया:** "अंबिया किराम ﷺ की हयात (कब्रों में) हकीकी हिस्सी दुनियावी है----बल्कि सय्यदी (मेरे आका) मुहम्मद बिन अब्दुल बाकी जुर्कानी फरमाते हैं कि अंबिया ﷺ की कुबूरे मुतहिहरा में अजवाजे मुतहिहरात पेश की जाती हैं और वे उनके साथ शब्बासी फरमाते हैं"।

**दियो बन्दी:** مولانا احمد رضا خان صاحب "ملفوظات حصه سوم" صفحہ 249 [کتاب کارنر لاہور] (बरेल्वी: मौलाना अहमद रजा खाँ साहब "मलफूजात हिस्सा सोम" सफहा 249) (बुक कार्नर झेलम)

**16 वहिह का फैसला:** **[سورة الاحزاب، آیت نمبر 6]** **النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ** (सूरातुल अहजाब, आयत नं 6)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "(हमारे खास) नबी ﷺ मौमिनीन की जानों से भी बढ़ कर उन पर हक रखते हैं, और इनकी बीवियाँ उन (मौमिनीन) की माँएँ हैं"।

**17 उलेमा का नज़रिया:** "अब रहा मशाइख की रुहानियत से इस्तफादा और उनके सीनों और कब्रों से बातिनी फयोज़ (फायदे) हासिल करना सो बेशक यह सही है मगर उस तरीके से जो इसके अहल और खास लोगों को मालूम है ना उस तर्ज से जो अवाम में रायज हैं"।

**दियो बन्दी:** مولانا خليل احمد سهارنپوری صاحب "المهند على المفند" (سوال نمبر 11) صفحہ 40 [مکتبہ العلم لاہور] (देओबंदी: मौलाना खलील अहमद सहारनपुरी साहब "अल मुहन्नद अलल मुफन्नद" (सवाल नं 11) सफहा 40) (मक्तबा अल इल्म लाहौर)

**17 वहिह का फैसला:** **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक **رضی اللہ عنہ** रिवायत करते हैं: "सय्यिदना उमर बिन खत्ताब **رضی اللہ عنہ** के जमाने में जब लोग कहत साली का शिकार हो जाते तो सय्यिदना उमर **رضی اللہ عنہ** (कब्रे रसूल **ﷺ** से फैज़ लेने की बजाए) सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब **رضی اللہ عنہ** के वसीले से बारिश की दुआ करते और अर्ज करते: "ऐ **ﷺ** बेशक पहले पहले हम अपने नबी **ﷺ** को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और (उनकी दुआ से) तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। अब (उनकी वफात के बाद) हम तेरी बारगाह में अपने नबी **ﷺ** के चचा को वसीले के तौर पर लेकर आए हैं। पस (उनकी दुआ से) हम पर बारिश नाजिल फरमा। (रावी कहते हैं) पस यूँ उनपर बारिश बरस पड़ती"।

**[صحيح بخاری "كتاب الاستسقاء" حديث نمبر 1010]** (सही बुखारी "किताबुल इस्तिस्का" हदीस नं 1010)

**18 उलेमा का नज़रिया:** "अगर बिल फर्ज बाद जमाना-ए-नबवी **ﷺ** भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खातमियत मुहम्मदी **ﷺ** में कुछ फर्क ना आएगा"।

**दियो बन्दी:** مولانا قاسم نانوتوی صاحب "تحذیر الناس" صفحہ 34 [دارالاشاعت कराچی] (देओबंदी: मौलाना कसिम नानोत्वी साहब "तहजीरुन्नास" सफहा 34) (दारुल इशाअत कराची)

**18 वहिह का फैसला:** **[سورة الاحزاب، آیت نمبر 40]** **مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا** (सूरातुल अहजाब, आयत नं 40)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** मुहम्मद **ﷺ** तो नहीं तुम मर्दों में से किसी के बाप बल्कि वह तो **ﷺ** के रसूल और खातमुन्नबियीन **ﷺ** हैं और हर चीज **ﷺ** के इल्म में है"।

**तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सोबान **رضی اللہ عنہ** रिवायत करते के रसूलुल्लाह **ﷺ** ने इर्शाद फरमाया: "मेरी उम्मत में 30 झूठे पैदा होंगे, उनमें से हर एक यही दावा करेगा कि वह **ﷺ** का नबी है जबकि मैं (खातमुन्नबियीन) हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं"।

(इसकी सनद बिल इज्मा मुहद्दीसीन सहीह है) (सुनन अबी दाऊद "किताबुल फितन" हदीस नं 4252)

**19 उलेमा का नज़रिया:** (रसूलुल्लाह **ﷺ** के 650 साल बाद) शेख अब यज़ीद कर्तबी ऐसे नौजवान को मिले जिसे लोगों के मत्तालिक कशफ हो जाता था के कौन जन्नत में है और कौन दोजख में? बल्कि करतबी साहब ने उसकी माँ को 70,000 मर्तबा कलमा बकश कर उसके कशफ के सहीह होने का फ़ौरन तजरीब भी कर लिया।

**दियो बन्दी:** مولانا شيخ زكريا صاحب "فضائل أعمال" صفحہ 484 [کتاب خانہ رضی لاہور] (देओबंदी: मौलाना शेख ज़करिया साहब "फज़ाईल-ए आमाल" सफहा 484) (कुतुबखाना फैज़ी लाहौर)

**19 वहिह का फैसला:** **[سورة آل عمران، آیت نمبر 179]** **وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مَن رُّسُلِهِ مَن يَشَاءُ** (सूरह आले इम्रान, आयत नं 179)

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "और **ﷺ** (की यह शान) नहीं है कि तुम लोगों को ग़ैब पर आगाह करदे बल्कि **ﷺ** (ग़ैब की खबरों के लिये) अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है"।

**आखिरी वसियत:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رضی اللہ عنہ** से रिवायत है कि रसूलुल्लाह **ﷺ** ने अपनी वफात से 3 माह पहले हज्जतुल विदा के मौक़े पर वसियत करते हुए इर्शाद फरमाया:

★ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक मैं अपने बाद तुम में दो ऐसी अज़ीम चीजे छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह ना होंगे: ❶ **ﷺ** की किताब और ❷ उसके रसूल **ﷺ** की सुन्नत (जो सहीह हदीसों से माखूज हो)"।

**[الموطاء للإمام مالك "كتاب القدر" حديث نمبر 1628، المستدرک للحاکم "كتاب العلم" حديث نمبر 318]** (अल मौअत्ता लिल मालिक "किताबुल कदर" हदीस नं 1628, अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस नं 318)

★ **नोट:** **ﷺ** ने उलेमा और दर्वेश की तालीमात के बजाए अपनी वहीह (कुरआन और उसकी तफसीर यानी सहीह हदीस) की हिफाज़त की जिम्मेदारी खुद ली है।

**[النساء : 115] ، [المستدرک للحاکم "كتاب العلم" حديث نمبر 399]** (अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस नं 399)

★ **नोट:** **ﷺ** इज्मा-ए-उम्मत को हज्जत मानना दरअसल कुरआन व सहीह हदीस का हुकम मानने में ही दाखिल है : अगर कुरआन व सुन्नत (सहीह हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत की मुखालफ़त ना आए तो कयास या इज्तिहाद करना जायज है: **[المصنف لابن أبي شيبة "كتاب البيوع والاقضية" أثر نمبر 22,990]** (अल मुसन्नफ लिइब्ने अबी शैबह "किताबुल बुयू वल अक्जियह" असर नं 22,990)